

ट्रैफिक सेन्स: सड़क दुर्घटनाओं को नियंत्रित करने का कॉमनसेन्स

डॉ० अभिषेक श्रीवास्तव

सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा (राजस्थान)

Email: shanu9144@gmail.com

Available online at: www.sijmr.org

सारांश

वर्तमान डिजिटल युग में लगभग प्रत्येक व्यक्ति की दुनिया मोबाइल में सिमट कर रह गई है। डिजिटल युग में तीव्रता से प्रविष्ट होने के साथ-साथ व्यक्ति का व्यक्ति से प्रत्यक्ष संपर्क एवं अनौपचारिक सामाजिक मेल-मिलाप अत्यंत सीमित हो चुके हैं। लिखने और पढ़ने जैसी समस्त सुविधाएँ मोबाइल में उपलब्ध हो जाने से न तो कोई पुस्तकों के अध्ययन में रुचि लेता दिखता है और न ही अपने विचारों को लिखने में। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि डिजिटल युग में छोटे-मोटे कार्यों को करने में लगने वाले समय की बचत हो जाती है किन्तु फिर भी हर व्यक्ति को समय की कमी होने की शिकायत बनी रहती है। ऐसे में व्यक्ति जल्दबाजी की विचित्र स्थिति में बना रहता है। बाजार में स्मार्ट फोन, स्मार्ट टीवी, स्मार्ट वॉच जैसे विभिन्न उपकरण उपलब्ध हैं किन्तु इनके अधिकाधिक एवं असीमित उपयोग के चलते मानव स्वयं की स्मार्टनेस खो चुका है। छोटी से छोटी बात का रिमाइंडर मोबाइल में लगा दिए जाने से ब्रेन मैमोरी का उपयोग अत्यंत सीमित हो चुका है। ऐसे में अधिकांश लोगों में याददाश्त की कमी की समस्या बढ़ने लगी है। स्वतंत्रता की बजाए स्वच्छंदता को प्रायिकता प्रदान की जाने लगी है। नियमों की अनुपालना को दुस्साध्य, बंधनपूर्ण एवं जटिल कार्य समझा जाने लगा है। ऐसे में नियमों का उल्लंघन करना एवं लापरवाही बरतना लोगों की आदत बन चुका है। वाहन चलाते समय ट्रैफिक नियमों की धज्जियाँ उड़ाते चालक हमारे इर्द-गिर्द ही नज़र आ जाते हैं। वाहन चालकों में कॉमनसेन्स की कमी के चलते ट्रैफिक सेन्स भी कम होने लगा है और यही हमारे देश में होने वाली सड़क दुर्घटनाओं का एक बड़ा कारण भी है। प्रस्तुत शोधपत्र में ट्रैफिक सेन्स का विवेचन कॉमन सेन्स के दायरे में लाकर किया गया है।

मुख्य शब्द: डिजिटल युग, बुद्धि, कॉमन सेन्स, ट्रैफिक सेन्स, सड़क दुर्घटना

I. परिचय

समस्त प्राणी जगत में बुद्धि वह तत्त्व है जो कि मानव को अन्य प्राणियों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ सिद्ध करता है। मानव में ही वह क्षमता निहित होती है जिसके द्वारा वह अपनी बुद्धि का यथोचित उपयोग कर उद्देश्यपूर्ण क्रिया करता है, विवेकशील चिन्तन करता है तथा वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करता है। बुद्धि के बल पर ही मानव अपने विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। मनोवैज्ञानिक बिनै (Binet)के अनुसार बुद्धि, भली प्रकार से निर्णय करने, समझने एवं तर्क करने की योग्यता है।¹ जब बुद्धि का प्रयोग दैनिक जीवन में सामान्य से लेकर विशिष्ट कार्यों के निष्पादन हेतु किया जाता है तो इसे 'व्यावहारिक बुद्धि अथवा कॉमन सेन्स' कहा जाता है। कॉमन सेन्स के अंतर्गत किसी व्यक्ति से यह अपेक्षित होता है कि वह किसी भी कार्य को किए जाने से पूर्व उसके सभी पक्षों सहित कार्य-कारण के परिणाम पर भली-भाँति विचार कर ले और उसी के उपरान्त उस कार्य को निष्पादित करे। ऐसा करने से न सिर्फ वह कार्य योजनाबद्ध तरीके से पूर्ण हो सकेगा अपितु उसमें कुशलता भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगेगी। कॉमन सेन्स के प्रयोग से सही-गलत, अच्छा-बुरा, लाभ-हानि जैसे द्वंद्व पक्षों में भेद किया जाना संभव होता है। कॉमन सेन्स के प्रयोग से संभावित संकट का आँकलन किया जा सकता है तथा उस संकट को टालने

हेतु त्वरित योजना बनाई जा सकती है एवं महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए जा सकते हैं।

कॉमन सेन्स से संबन्धित एक महत्त्वपूर्ण विषय है ट्रैफिक सेन्स जो कि हमारे देश के वाहन चालकों में नितान्त कम देखा जाता है। इसकी कमी से देश में सड़क दुर्घटनाओं का ग्राफ दिनों-दिन बढ़ता ही जा रहा है। एक आँकड़े के मुताबिक देश में औसतन 1.5 लाख लोगों की प्रतिवर्ष सड़क दुर्घटना में मौत हो जाती है।² इनमें से 1130 सड़क दुर्घटना प्रतिदिन और इन दुर्घटनाओं में 422 मौत प्रतिदिन हमारे देश में हो जाती है।³ वर्ष 2021 के दौरान देश में कुल 4,12,432 सड़क दुर्घटनाओं को दर्ज किया गया था जिनमें से 1,53,972 व्यक्तियों की मृत्यु जबकि 3,84,448 व्यक्तियों को गंभीर क्षति कारित हुई थी।⁴ भारत में प्रतिवर्ष होने वाली सड़क दुर्घटनाओं को मुख्यतः दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है, पर्यावरणीय कारक एवं मानवीय कारक। इन कारकों में मानवीय कारक सड़क दुर्घटनाओं के लिए सर्वाधिक उत्तरदायी हैं। मानवीय कारकों के अंतर्गत वाहन चालकों द्वारा की गई गंभीर भूल अथवा असावधानी अथवा लापरवाही को सड़क दुर्घटनाओं का प्राथमिक कारण माना जा सकता है।

II. संबन्धित कार्य

1. Helmet Attitudes and Practices among University students of Dental and Medical

Professional Courses in Vadodara, India विषयक शोधपत्र में शोधकर्त्ताओं थानवीर कलांतरकथ एवं राम्या अय्यर द्वारादुपहिया वाहन चालकों में हैलमेट के प्रयोग करने संबन्धीसजगता को लेकर विश्लेषण किया गया है। शोधपत्र में दुपहिया वाहन चालकों में हैलमेट के प्रयोग को बढ़ाने हेतुप्रचलित कानूनों एवं नियमावलियों में संशोधन करने संबन्धी सुझाव प्रदान किए गए हैं।

2. Current Science A Study on Traffic Safety, Risk Perception Necessity of Traffic Education for School Students and Respect in Traffic Current Science Current Scienceविषयक शोधपत्र में शोधकर्त्ताओं द्वारा ट्रैफिक सेपटी संबन्धी ज्ञान को स्कूली शिक्षा से जोड़े जाने, इसे मानवोन्मुखी बनाने तथा इसे संधृत बनाने के संबन्ध में महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रदान किए गए हैं।

3. Assessment of Traffic Safety and Awareness Among Road Users in Salalah Sultanate of Oman विषयक शोधपत्र में शोधकर्त्ताओं द्वाराविकासशील देशों में आमजन की गैर-जागरूकता को सड़क दुर्घटनाओं का सबसे प्रमुख कारण माना गया है। शोधपत्र में कानून के सख्त प्रवर्तन हेतु बनाई जाने वाली रणनीतियों के बारे में भी विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

4. Traffic Sense: Rich Monitoring of Road and Traffic Conditions using Mobile Smartphonesविषयक शोधपत्र में सड़क

दुर्घटनाओं को नियंत्रित करने हेतु मोबाइल तकनीकको प्रयुक्त किए जाने के संबन्ध में जानकारी प्रदान की गई है और इस हेतु वाहनों में विशेष प्रकार के सेन्सर को प्रयुक्त किए जाने का विचार दिया गया है।

5. Traffic Sense: Which Factors Influence the Skill to Predict the development of Traffic Sense ? विषयक शोधपत्र में36 भागीदारों परसड़क दुर्घटना के अनुमान, उसकी जटिलता तथा उससे जनित संभावित खतरे का परीक्षण किया गया है।

उपर्युक्त वर्णित शोधपत्रों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि ट्रैफिक सेन्स विषय से जुड़े विभिन्न पक्षों पर शोधकार्य किया जा चुका है किन्तु इसे कॉमन सेन्स के दायरे में लाकर अत्यंत सीमित कार्य किया गया है।

III.शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधपत्र में प्रश्नावली विधि एवं अवलोकन विधि का प्रयोग कर प्राथमिक आँकड़ों का संग्रहण किया गया है जबकि द्वितीयक आँकड़ों का संग्रहण विभिन्न सरकारी रिपोर्ट्स से किया गया है।इसके अतिरिक्त प्रयुक्त आँकड़ों कर विश्लेषण एवं ग्राफिकल निरूपण किया गया है।

IV.शोध परिणाम एवं विश्लेषण

मानवीय कारकों से घटित होने वाली सड़क दुर्घटनाएँ

केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की ओर से कराए गए सर्वे के मुताबिक वर्ष 2021 में सड़क दुर्घटना में हुई कुल मौतों के प्रतिशत तथा उनके कारणों को एक सारिणी के माध्यम से दर्शाया गया है।

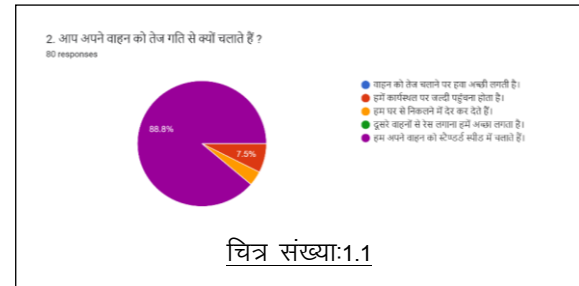
सड़क दुर्घटना में हुई कुल मौतें (वर्ष 2021)		
क्रम संख्या	मौत का कारण	मौत का प्रतिशत
1	रैड लाइट लांघना	0.40%
2	वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग करना	1.90%
3	शराब पीकर वाहन चलाना	2.40%
4	रोंग साइड में गाड़ी चलाना	5.0 %
5	हैलमेट नहीं पहनना, सीट बेल्ट नहीं बांधना एवं अन्य कारण	18.10%
6	तय सीमा से अधिक गति पर वाहन चलाना	72.20%

स्रोत: Road Accidents in India 2021, Ministry of Road Transport and Highways, Transport Research Wing, Government of India, पृ० सं० 39

उपर्युक्त सारिणी के अध्ययन तथा अवलोकन द्वारा भारत में होने वाली सड़क दुर्घटनाओं के निम्नलिखित कारण ज्ञात होते हैं।

1. ओवर स्पीड एवं रैड लाइट लांघना

वाहन चालकों द्वारा एक-दूसरे से आगे निकलने हेतु की गई जल्दबाजी, सीमित समय में माल की डिलीवरी, कार्यस्थल पर पहुँचने की जल्दी जैसे कई कारण हैं जिनके चलते वाहन चालक अपने वाहनों को तय सीमा से अधिक

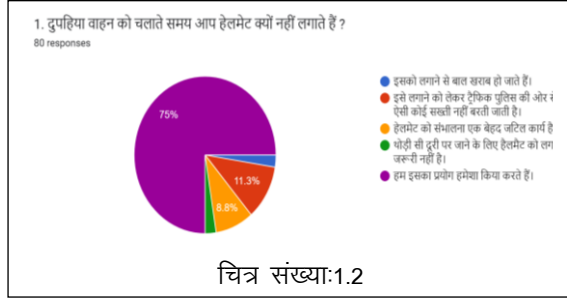


रफ्तार पर चलाने लगते हैं। तेज रफ्तार के चलते कई बार रैड लाइट को भी लाँघ दिया जाता है। परिणामस्वरूप गंभीर प्रकार के सड़क हादसे जन्म लेते हैं। शोधकर्ता द्वारा किए गए सर्वेक्षण में 88.8 प्रतिशत चालक अपने वाहन को स्टैण्डर्ड स्पीड में चलाते हैं, 7.5 प्रतिशत चालक अपने वाहन को इसलिए तेज चलाते हैं क्योंकि उन्हें अपने कार्यस्थल पर जल्दी पहुँचना होता है जबकि 3.7 प्रतिशत वाहन चालक अपने घर से निकलने में देर कर देने के कारण वाहन को तेज गति से चलाते हैं।

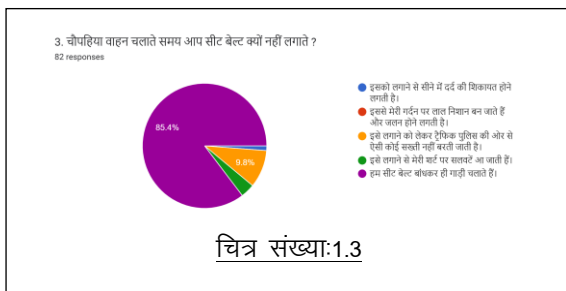
2. हैलमेट एवं सीट बेल्ट का प्रयोग नहीं करना

प्राथमिक आँकड़ा संग्रहण के दौरान यह पाया गया कि बेहद तुच्छ कारणों के चलते दुपहिया वाहन चालकों द्वारा हैलमेट एवं चौपहिया वाहन चालकों द्वारा सीट बेल्ट का प्रयोग नहीं किया जाता है। इसे सरासर लापरवाही, गैर-जिम्मेदाराना एवं बे-दिमागी हरकत कहा जा सकता है। आखिरकार हमारे शरीर की सुरक्षा की प्राथमिक जिम्मेदारी हमारी स्वयं की ही है। ऐसे में मामूली सड़क हादसे भी गंभीर सड़क दुर्घटनाओं का स्वरूप धारण कर

सकते हैं। शोधकर्ता द्वारा किए गए सर्वेक्षण में 75 प्रतिशत चालक अपने दुपहिया वाहन को चलाते समय सदैव हैलमेट का प्रयोग किया करते हैं (चित्र संख्या: 1.2)।



इसका प्रयोग नहीं करने वालों में 2.5 प्रतिशत चालक इसलिए इसका प्रयोग नहीं करते कि इसे लगाने पर बाल खराब हो जाते हैं, 11.3 प्रतिशत का मानना है कि इसे लगाने को लेकर ट्रैफिक पुलिस की ओर से कोई सख्ती नहीं बरती जाती है, 8.8 प्रतिशत का मानना है कि हैलमेट को संभालना एक बेहद जटिल कार्य है जबकि 2.5 प्रतिशत चालक थोड़ी सी दूरी पर वाहन चलाने में हैलमेट का प्रयोग करना आवश्यक नहीं समझते हैं। इसी प्रकार सर्वेक्षण से प्राप्त जानकारी के अनुसार 85.4 प्रतिशत चौपहिया वाहन चालक वाहन चलाते समय सीट बेल्ट का प्रयोग करते हैं।



सीट बेल्ट का प्रयोग नहीं करने वालों में 1.2 प्रतिशत चालकों को इसका प्रयोग करने पर सीने में दर्द की शिकायत होने लगती है, 9.8 प्रतिशत चालकों का मानना है कि इसे लगाने को लेकर ट्रैफिक पुलिस की ओर से ऐसी कोई सख्ती नहीं बरती जाती है, जबकि शेष 3.7 प्रतिशत चालकों का मानना है कि इसके प्रयोग से उनकी शर्ट पर खरबटें आ जाने से शर्ट खराब हो जाती है।

3. शराब पी कर वाहन चलाना

भारत में होने वाली सड़क दुर्घटनाओं का एक बड़ा कारण शराब पी कर वाहन चलाना भी है। सामान्यतः ऐसी दुर्घटनाएँ क्रिसमस, न्यू ईयर तथा होली के अवसर पर अधिकता में दिखाई पड़ती हैं। हालाँकि ऐसे वाहन चालकों की धर-पकड़ हेतु यातायात पुलिस द्वारा उन अवसरों पर विशेष अभियान भी चलाए जाते हैं। यह भी एक विचारणीय प्रश्न है कि वाहन चालकों को शराब पी कर वाहन चलाने के दुष्परिणामों का भली-भाँति भान होता है किन्तु फिर भी वे ऐसा करने से बाज नहीं आते हैं।

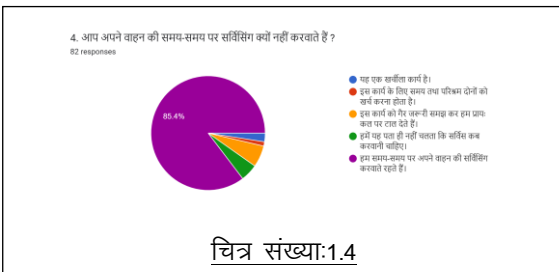
4. वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग करना

सड़क दुर्घटनाओं के विभिन्न कारणों में से एक बड़ा कारण यह भी है कि वाहन चलाते समय चालक मोबाइल फोन का प्रयोग करते हैं। इतना ही नहीं सड़क पार करते समय अथवा रेलवे ट्रेक को पार करते समय भी लोग

मोबाइल फोन के प्रयोग से स्वयं को रोक नहीं पाते हैं। हाल ही में ऐसा ही एक घटनाक्रम मथुरा रेलवे स्टेशन पर देखा गया जहाँ मोबाइल फोन का प्रयोग करते लोको पायलट की लापरवाही के चलते एक ट्रेन पटरी से उतर गई। इस बात को गहराई से समझ लेने की आवश्यकता है कि मोबाइल फोन होने का यह मतलब नहीं है कि उसका प्रयोग हर समय किया जाए।

5. अपने-अपने वाहन की समय-समय पर सर्विसिंग नहीं करवाना

समय-समय पर अपने वाहन की सर्विसिंग करवा लेने से उसमें संभावित खराबी का पता लगाया जा सकता है। वाहन को चलाते समय उसकी चेन टूट जाना, ब्रेक फेल हो जाना, टायर में ब्लास्ट हो जाना, रात में हैड लाइट का न जलना, बारिश के समय वाइपर का न चलना जैसी खराबियों के चलते दुर्घटनाएँ जन्म ले जाती हैं। इनका एक ही कारण है कि वाहन चालक अपने वाहन की समय-समय पर सर्विसिंग नहीं करवाते हैं।

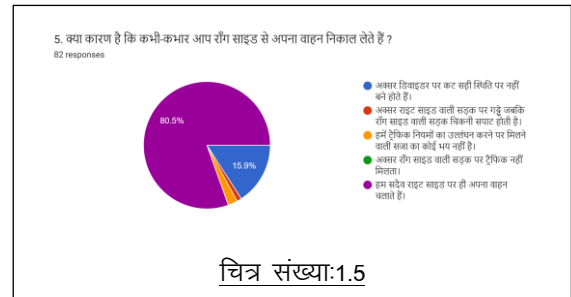


सर्वेक्षण के दौरान पाया गया कि 85.4 प्रतिशत चालक समय-समय पर अपने वाहन की सर्विसिंग करवाते हैं। 2.4 फीसदी लोग इसे

करवाना एक बेहद खर्चीला कार्य समझते हैं। 1.2 प्रतिशत लोगों का मानना है कि सर्विसिंग के लिए समय और परिश्रम दोनों को खर्च करना पड़ता है। 6.1 प्रतिशत लोग सर्विसिंग को एक गैर-जरूरी कार्य मानकर प्रायः इसे कल पर टाल देते हैं। 4.9 प्रतिशत लोगों को यह पता ही नहीं लगता कि उन्हें अपने वाहन की सर्विसिंग कब करवानी चाहिए।

6. रांग साइड पर वाहन को चलाना

सर्वेक्षण के दौरान ज्ञात हुआ कि 79.5 प्रतिशत चालक अपने वाहन को सही साइड पर चलाते हैं। 16.9 प्रतिशत चालक सड़क पर डिवाइडर का कट सही जगह स्थित नहीं होने



के कारण अपना वाहन रांग साइड पर चलाते हैं। 1.2 प्रतिशत चालक अपनी लेन में अधिक गड्ढे होने के कारण जबकि 2.4 प्रतिशत चालक ट्रैफिक नियमों के उल्लंघन का कोई भय नहीं होने के कारण अपना वाहन रांग साइड पर चलाते हैं।

7. दाएँ-बाएँ देखे बिना ही सड़क को पार करना

अधिकांशतः लोग अपने दाएँ-बाएँ देखे बिना ही सड़क को पार करने की कोशिश करने

लगते हैं और आने वाले किसी वाहन से जा टकराते हैं। इस प्रकार छोटी सी लापरवाही उनकी जान पर भारी पड़ जाती है।

8. इंडिकेटर का प्रयोग न करना

आमतौर पर सड़कों पर यह भी देखा जाता है कि चालक अपने वाहन पर लगे इंडिकेटर का इस्तेमाल किए बिना ही अचानक उसे मोड़ लेते हैं। ऐसे में पीछे चल रहे वाहन चालक को समय रहते पता ही नहीं चल पाता और वाहन की भिड़ंत हो जाती है। कुछ नज़ारे ऐसे भी दिखाई पड़ते हैं जहाँ आगे चल रहे वाहन चालक द्वारा अचानक से ब्रेक लगा दिए जाते हैं और ठीक पीछे चल रहे वाहन की उससे टक्कर हो जाती है।

कॉमन सेन्स द्वारा ट्रैफिक सेन्स का विकास

वाहन चालक एवं राहगीर अपने कॉमन सेन्स के प्रयोग द्वारा संभावित सड़क दुर्घटनाओं को टाल सकते हैं। यातायात नियमों का अक्षरशः पालन कर वे अपने ट्रैफिक सेन्स का विकास कर सकते हैं। चेतन मस्तिष्क के सहज प्रयोग द्वारा वाहन चलाते समय तथा सड़क को क्रॉस करते समय उन छोटी-छोटी गलतियों से बचा जा सकता है जो आमतौर पर सड़क दुर्घटनाओं का कारण बनती हैं। इस हेतु शोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित सुझाव दिए गए हैं।

- वाहन को समानान्तर न चलाएँ और ऐसा करते समय बातचीत न करें।

- जहाँ तक हो सके अपने वाहन को धीमे एवं सजगतापूर्ण चलाएँ।
- शराब पी कर वाहन कभी न चलाएँ।
- सड़क पर गुजरते समय ईयर फोन, हैंडफोन, मोबाइल आदि का प्रयोग न करें।
- गंतव्य स्थल पर जाने से पूर्व अपने वाहन में साइड मिरर, हैंड लाइट, वाइपर, ब्रेक, एयर प्रेशर, फ्यूल आदि की समुचित जाँच कर लें।
- वाहन चलाते समय किसी अन्य वाहन से सुरक्षित दूरी बनाए रखें।
- अपने वाहन को उचित एवं सुरक्षित स्थान पर ही पार्क करें।
- वाहन चलाते समय हैलमेट अथवा सीट बेल्ट का प्रयोग अवश्य करें।
- रात में क्लीयर विज़न के चश्मे पहन कर वाहन चलाएँ।
- वाहन को दाएँ अथवा बाएँ मोड़ते समय इंडिकेटर का प्रयोग अनिवार्य रूप से करें।

V. निष्कर्ष

देश में बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं के संबन्ध में प्राप्त आँकड़ों पर गौर करने से यह ज्ञात हो जाता है कि इन्हें प्रचलित कानूनों और सरकारी प्रयासों द्वारा आंशिक रूप से नियंत्रित किया जा सकता है किन्तु वाहन चालकों द्वारा कॉमन सेन्स के यथोचित प्रयोग द्वारा इन पर

प्रभावी नियंत्रण स्थापित किया जा सकता है।
कॉमन सेन्स के विकास द्वारा ट्रैफिक सेन्स का

विकास किया जा सकता है और संभावित
दुर्घटनाओं को टाला जा सकता है।

संदर्भ सूची

¹https://ciet.nic.in/moocspdf/Psychology03/lepy_10102_etext.pdf

² Parliament library and reference, research, documentation and information service (LARRDIS). No. 03/RN/Ref/April/2023.

³Ibid

⁴ Road Accidents in India 2021, Ministry of Road Transport and Highways, Transport Research Wing, Government of India, P. 01

⁵Mathura Railway Mishap: Smartphone-distracted loco-pilot kept bag on throttle, reveals probe,

[https://www.hindustantimes.com/cities/others/mathura-railway-mishap-smartphone-distracted-loco-pilot-kept-](https://www.hindustantimes.com/cities/others/mathura-railway-mishap-smartphone-distracted-loco-pilot-kept-bag-on-throttle-reveals-probe-101695922057247.html)

[bag-on-throttle-reveals-probe-101695922057247.html](https://www.hindustantimes.com/cities/others/mathura-railway-mishap-smartphone-distracted-loco-pilot-kept-bag-on-throttle-reveals-probe-101695922057247.html), accessed on 03/10/2023 at 9:30 am.